पाठ -4 फूल और काँटा (कविता)

रचनाकार – अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध

‘फूल और कांटे’ अयोध्या सिंह ‘उपाध्याय’ जी द्वारा रचित कविता है । इस कविता में कवि ने यह सन्देश देना चाहा है कि किसी का कर्म ही होता है जो उसे महानता के शिखर पर ले जाते हैं । इसमें उसका जन्म या कुल का कोई हाथ नहीं होता ।इस बात को स्पष्ट करने के लिए कवि ने फूल और कांटे का चयन किया ।

कविता

हैं जन्म लेते जगह में एक ही,

एक ही पौधा उन्हें है पालता

रात में उन पर चमकता चाँद भी,

एक ही सी चाँदनी है डालता।

मेह उन पर है बरसता एक सा,

एक सी उन पर हवाएँ हैं बही

पर सदा ही यह दिखाता है हमें,

ढंग उनके एक से होते नहीं।

छेदकर काँटा किसी की उंगलियाँ,

फाड़ देता है किसी का वर वसन

प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,

भँवर का है भेद देता श्याम तन।

फूल लेकर तितलियों को गोद में

भँवर को अपना अनूठा रस पिला,

निज सुगन्धों और निराले ढंग से

है सदा देता कली का जी खिला।

है खटकता एक सबकी आँख में

दूसरा है सोहता सुर शीश पर,

किस तरह कुल की बड़ाई काम दे

जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

* एक या दो वाक्यों में उत्तर दें।

प्रश्न :- 1. फूल और काँटा कहाँ जन्म लेते हैं ?

उत्तर :- फूल और काँटा एक ही पौधे पर जन्म लेते हैं ।

प्रश्न 2 :- काँटे की क्या विशेषता हैं ?

उत्तर :- काँटा नकारात्मकता का प्रतीक है क्योंकि काँटे चुभ कर लोगों को कष्ट देते हैं।वह लोगों हमेशा तकलीफ ही देता है।

प्रश्न 3. :- फूल की क्या विशेषता हैं ?

उत्तर :- फूल सकारात्मकता का प्रतीक है क्योंकि वो लोगों को सदैव खुशियाँ बाँटता है।वह अपनी कोमलता और सुगंध के कारण सबको अच्छा लगता है और देवताओं के सिर पर चढ़ाया जाता है।

प्रश्न 4.:- फूल और काँटा किस का प्रतीक हैं ?

उत्तर :- फूल सुख और सकारात्मकता का प्रतीक है और काँटा दु:ख और नकारात्मकता का प्रतीक है।

* तीन - चार वाक्यों में उत्तर दें।

प्रश्न 1 :- फूल और काँटे को कौन- सी समान परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं ?

उत्तर :- फूल और काँटा दोनों ही एक स्थान पर एक ही पौधे पर जन्म लेते हैं।उनका विकास भी एक जैसे होता है।उनको एक समान ही सूर्य की धूप और एक समान ही बारिश का पानी मिलता है।वायु का स्पर्श भी समान रूप से मिलता है।फूल और काँटा दोनों एक समान वायु, धूप और बारिश झेलते हुए दोनों विकसित होते है।

प्रश्न 2 :- फूल और कांटे के स्वभाव में क्या अंतर है

उत्तर : - फूल और कांटा के स्वभाव में संस्कारों का अंतर होता है। फूल और कांटे एक पौधे के हिस्से होते हैं, इस प्रकार दोनो सहोदर भाई हुये लेकिन दोनों के स्वभाव और कार्य पद्धति में अंतर होता है। फूल जहाँ लोगों के चेहरे पर मुस्कान बिखरते हैं, वही काँटे चुभ कर लोगों को कष्ट देते हैं।फूल सकारात्मकता का प्रतीक है क्योंकि वो लोगों को सदैव खुशियाँ बाँटता है, फूल अपनी कोमलता और सुगंध के कारण सबको अच्छा लगता है और देवताओं के सिर पर

चढ़ाया जाता है।तो काँटा नकारात्मकता का प्रतीक है क्योंकि वो लोगों हमेशा तकलीफ ही देता है लोगों के कपड़े फाड़ देता है, तितलियों के पर कतर देता है। इस प्रकार फूल का स्वभाव धार्मिक तथा कांटे का स्वभाव अधार्मिक है।

प्रश्न 3 :- आपकी दृष्टि में कुलवान व्यक्ति महान्/ बड़ा होता है या गुणवान । अपने विचार लिखें।

उत्तर :- हमारी दृष्टि में कुलवानकी अपेक्षा गुणवान व्यक्ति बड़ा, भला और महान् होता है। वह अपने गुणों और अच्छे स्वभाव से सभी का मन मोह लेता है।वह किसी को कष्ट नहीं देता।वह सदैव दूसरों की भलाई के बारे में सोचता है।वह कुल की बजाए अपने गुणों के कारण सम्मान प्राप्त करता है।

प्रश्न :- 'किस .....बड़प्पन की कसर ' काव्य- पंक्ति की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रसंग :- प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठ्य - पुस्तक 'आओ हिंदी सीखें ' में संकलित कविता 'फूल और काँटा ' से ली गई हैं जिसके कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय' हरिऔध ' हैं।कवि ने इस कविता के द्वारा अच्छे और बुरे लोगों के व्यवहार पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि कवि यह संदेश देना चाहता है कि केवल अच्छे खानदान में जन्म लेने से बड़ा नहीं हुआ जा सकता। बड़े होने के लिये बड़प्पन का होना निहायत जरूरी है। केवल ऐसा बड़ा होना किस काम का जिसकी छत्रछाया में किसी को आश्रय न मिले।

* समानार्थक शब्द लिखें।

फूल	सुमन, पुष्प, प्रसून
चाँद	चन्द्र, इन्दु, शशि, राकेश
चाँदनी	मरीची,ज्योत्सना
मेघ	बादल, घन, जलद
हवा	वायु, समीर, पवन
भौंरा	भ्रमर, अष्टपाद, भँवरा

* सौजन्य :- सुनीता चोपड़ा, हिंदी शिक्षिका